अष्टोत्तर – शत दिव्य शिव – क्षेत्र

आगम ग्रन्थों में भगवान् शिव के निम्नलिखित 108 दिव्य क्षेत्र बताये गये हैं।

अष्टोत्तरशतं भूमौ स्थितं क्षेत्रं वदाम्यहम् ।
कैवल्यशैले श्रीकण्ठः केदारो हिमवत्यपि ॥ 1
काशीपुर्यां विश्वनाथः श्रीशैले मल्लिकार्जुनः ।
प्रयागे नीलकण्ठेशो गयायां रुद्रनामकः ॥ 2
नीलकण्ठेश्वरः साक्षात् कालञ्जरपुरे शिवः ।
द्राक्षारामे तु भीमेशो मायूरे चाम्बिकेश्वरः ॥ 3
ब्रह्मावर्ते देवलिङ्गं प्रभासे शशिभूषणः ।
वृषध्वजाभिधः श्रीमाञ्श्वेतहस्तिपुरेश्वरः ॥ 4
गोकर्णेशस्तु गोकर्णे सोमेशः सोमनाथके ।
श्रीरूपाख्ये त्यागराजो वेदे वेदपुरीश्वरः ॥ 5
भीमारामे तु भीमेशो मन्थने कालिकेश्वरः ।
मधुरायां चोक्कनाथो मानसे माधवेश्वरः ॥ 6
श्रीवाञ्छके चम्पकेशः पञ्चवट्यां वटेश्वरः ।
गजारण्ये तु वैद्येशस्तीर्थाद्रौ तीर्थकेश्वरः ॥ 7
कुम्भकोणे तु कुम्भेशो लेपाक्ष्यां पापनाशनः ।
कण्वपुर्यां तु कण्वेशो मध्ये मध्यार्जुनेश्वरः ॥ 8
हरिहरपुरे श्रीशंकरनारायणेश्वरः ।
विरञ्चिपुर्यां मार्गेशः पञ्चनद्यां गिरीश्वरः ॥ 9
पम्पापुर्यां विरूपाक्षः सोमाद्रौ मल्लिकार्जुनः ।
त्रिमकूटे त्वगस्त्येशः सुब्रह्मण्येऽहिपेश्वरः ॥ 10
महाबलेश्वरः साक्षान्महाबलशिलोच्चये ।
रविणा पूजितो दक्षिणावर्तेऽर्केश्वरः स्वयम् ॥ 11
वेदारण्ये महापुण्ये वेदारण्येश्वराभिधः ।
मूर्तित्रयात्मकः सोमपुर्यां सोमेश्वराभिधः ॥ 12

तमिल के पेरियपुराणम् में भारत के 274 पवित्र शैव – स्थानों का उल्लेख है। इनमें 4 – 5 स्थानों को छोड़कर अन्य सभी सुदुर दक्षिण भारत में स्थित हैं। इनके बारे में विस्तृत जानकारी हेतु गीताप्रेस गोरखपुर से छपे कल्याण के तीर्थांक विशेषांक को देखें।

अवन्त्यां रामलिङ्गेशः काश्मीरे विजयेश्वरः ।
महानन्दिपुरे साक्षान्महानन्दिपुरेश्वरः ॥ 13
कोटितीर्थे तु कोटीशो वृद्धे वृद्धाचलेश्वरः ।
महापुण्ये तत्र ककुद्गिरौ गङ्गाधरेश्वरः ॥ 14
चामराज्याख्यनगरे चामराजेश्वरः स्वयम् ।
नन्दीश्वरो नन्दिगिरौ चण्डेशो वधिराचले ॥ 15
नञ्जुण्डेशो गरपुरे शतशृङ्गेऽधिपेश्वरः ।
घनानन्दाचले सोमो नल्लूरे विमलेश्वरः ॥ 16
नीडानाथपुरे साक्षान्नीडानाथेश्वरः स्वयम् ।
एकान्ते रामलिङ्गेशः श्रीनागे कुण्डलीश्वरः ॥ 17
श्रीकन्यायां त्रिभङ्गीश उत्सङ्गे राघवेश्वरः ।
मत्स्यतीर्थे तु तीर्थेशस्त्रिकूटे ताण्डवेश्वरः ॥ 18
प्रसन्नाख्यपुरे मार्गसहायेशो वरप्रदः ।
गण्डक्यां शिवनाभस्तु श्रीपतौ श्रीपतीश्वरः ॥ 19
धर्मपुर्यां धर्मलिङ्गं कन्याकुब्जे कलाधरः ।
वाणिग्रामे विरिञ्चेशो नेपाले नकुलेश्वरः ॥ 20
मार्कण्डेयो जगन्नाथे स्वयम्भूर्नर्मदातटे ।
धर्मस्थले मञ्जुनाथो व्यासेशस्तु त्रिरूपके ॥ 21
स्वर्णावत्यां कलिङ्गेशो निर्मले पन्नगेश्वरः ।
पुण्डरीके जैमिनीशोऽयोध्यायां मधुरेश्वरः ॥ 22
सिद्धवट्यां तु सिद्धेशः श्रीकूर्मे त्रिपुरान्तकः ।
मणिकुण्डलतीर्थे तु मणिमुक्तानदीश्वरः ॥ 23
वटाटव्यां कृत्तिवासास्त्रिवेण्यां संगमेश्वरः ।
स्तनिताख्ये तु मल्लेश इन्द्रकीलेऽर्जुनेश्वरः ॥ 24
शेषाद्रौ कपिलेशस्तु पुष्पे पुष्पगिरीश्वरः ।
भुवनेशश्चित्रकूटे तूज्जिन्यां कालिकेश्वरः ॥ 25
ज्वालामुख्यां शूलटङ्को मङ्गल्यां संगमेश्वरः ।
बृहतीशस्तञ्जापुर्यां रामेशो वह्निपुष्करे ॥ 26
लङ्काद्वीपे तु मत्स्येशः कूर्मेशो गन्धमादने ।
विन्ध्याचले वराहेशो नृसिंहः स्यादहोबिले ॥ 27

कुरुक्षेत्रे वामनेशस्ततः कपिलतीर्थके ।
तथा परशुरामेशः सेतौ रामेश्वराभिधः ॥ 28
साकेते बलरामेशो बौद्धेशो वारणावते ।
तत्त्वक्षेत्रे च कल्कीशः कृष्णेशः स्यान्महेन्द्रके ॥ 29

(ललितागम, ज्ञानपाद, शिवलिङ्ग - प्रादुर्भाव - पटल)

भूमि पर स्थित 108 शैव क्षेत्र इस प्रकार हैं - कैवल्य शैल पर भगवान् शिव श्रीकण्ठ नाम से विराजमान हैं। वे हिमालय पर्वत पर केदार नाम से तथा काशीपुरी में विश्वनाथ नाम से विख्यात हैं। श्रीशैल पर मल्लिकार्जुन, प्रयाग में नीलकण्ठेश, गया में रुद्र, कालञ्जर में नीलकण्ठेश्वर, द्राक्षाराम में भीमेश्वर तथा मायूरम्(मायवरम्) में वे अम्बिकेश्वर कहे जाते हैं। वे ब्रह्मावर्त में देवलिङ्ग के रूप में, प्रभास में शशिभूषण, श्वेतहस्तिपुर में वृषध्वज, गोकर्ण में गोकर्णेश्वर, सोमनाथ में सोमेश्वर, श्रीरूप में त्यागराज तथा वेद में वेदपुरीश्वर के नाम से विख्यात हैं। भगवान् शिव भीमाराम में भीमेश्वर, मन्थन में कालिकेश्वर, मधुरा में चोक्कनाथ, मानस में माधवेश्वर, श्रीवाञ्छक में चम्पकेश्वर, पञ्चवटी में वटेश्वर, गजारण्य में वैद्यनाथ तथा तीर्थाचल में तीर्थकेश्वर नाम से प्रसिद्ध हैं। वे कुम्भकोणम् में कुम्भेश, लेपाक्षी में पापनाशन, कण्वपुरी में कण्वेश तथा मध्य में मध्यार्जुनेश्वर नाम से प्रतिष्ठित हैं। वे हरिहरपुर में शङ्कर - नारायणेश्वर, विरिञ्चिपुरी में मार्गेश, पञ्चनद में गिरीश्वर, पम्पापुरी में विरूपाक्ष, सोमगिरि पर मल्लिकार्जुन, त्रिमकूट में अगस्त्येश्वर तथा सुब्रह्मण्य में अहिपेश्वर नाम से समादृत होते हैं। महाबल पर्वत पर वे महाबलेश्वर नाम से, दक्षिणावर्त में साक्षात् सूर्य के द्वारा पूजित अर्केश्वर, वेदारण्यम् में वेदारण्येश्वर, सोमपुरी में सोमेश्वर, उज्जैन में रामलिङ्गेश्वर, कश्मीर में विजयेश्वर, महानन्दिपुर में महानन्दिपुरेश्वर, कोटितीर्थ में कोटीश्वर, वृद्धक्षेत्र में वृद्धाचलेश्वर तथा अति पवित्र ककुद्पर्वत पर वे गङ्गाधरेश्वर नाम से विख्यात हैं। भगवान् शिव चामराज नगर में चामराजेश्वर, नन्दिपर्वत पर नन्दीश्वर, वधिराचल पर चण्डेश्वर, गरपुर में नञ्जुण्डेश्वर, शतशृङ्गपर्वत पर अधिपेश्वर, घनानन्दपर्वत पर सोमेश्वर, नल्लूर में विमलेश्वर, नीडानाथपुर में नीडानाथेश्वर, एकान्त में रामलिङ्गेश्वर तथा श्रीनाग में कुण्डलीश्वररूप में विराजते हैं। वे श्रीकन्या में त्रिभङ्गीश्वर, उत्सङ्ग में राघवेश्वर, मत्स्य - तीर्थ में तीर्थेश्वर, त्रिकूट पर्वत पर ताण्डवेश्वर, प्रसन्नपुरी में मार्गसहायेश्वर, गण्डकी में शिवनाभ, श्रीपति में श्रीपतीश्वर, धर्मपुरी में धर्मलिङ्ग, कान्यकुब्ज में कलाधर, वाणिग्राम में विरिञ्चेश्वर तथा नेपाल में नकुलेश्वर कहे जाते हैं। जगन्नाथपुरी में वे मार्कण्डेश्वर, नर्मदा - तट पर स्वयम्भू, धर्मस्थल में मञ्जुनाथ, त्रिरूपक में व्यासेश्वर, स्वर्णावती में कलिङ्गेश्वर, निर्मल में पन्नगेश्वर, पुण्डरीक में जैमिनीश्वर, अयोध्या में मधुरेश्वर, सिद्धवटी में सिद्धेश्वर, श्रीकूर्माचल पर त्रिपुरान्तक, मणिकुण्डल - तीर्थ में मणिमुक्तानदीश्वर, वटाटवी में कृत्तिवासेश्वर, त्रिवेणीतट पर संगमेश्वर, स्तनिता - तीर्थ में मल्लेश्वर तथा इन्द्रकील पर्वत पर अर्जुनेश्वर रूप में विराजमान हैं। वे शेषाचल पर कपिलेश्वर, पुष्पगिरि पर पुष्पगिरीश्वर, चित्रकूट

में भुवनेश्वर, उज्जैन में कालिकेश्वर(महाकाल), ज्वालामुखी में शूलटङ्क, मङ्गली में संगमेश्वर, तञ्जापुरी(तंजौर) में बृहती(दी)-श्वर, पुष्पकर में रामेश्वर, लङ्का में मत्स्येश्वर, गन्धमादन पर कूर्मेश्वर, विन्ध्यपर्वत पर वराहेश्वर और अहोबिल में नृसिंह रूप से प्रकट हैं। प्रभु विश्वनाथ कुरुक्षेत्र में वामनेश्वर रूप में, कपिलातीर्थ में परशुरामेश्वर, सेतुबन्ध में रामेश्वर, साकेत में बलरामेश्वर, वारणावत में बौद्धेश्वर, तत्त्वक्षेत्र में कल्कीश्वर तथा महेन्द्राचल पर कृष्णेश्वर-रूप में व्यक्त हैं। वे कैलास पर्वत पर परम शिव, सूर्यबिम्ब में सदाशिव, वैकुण्ठ व पाताल में हाटकेश्वर, ब्रह्मलोक में ब्रह्मेश्वर, इन्द्रप्रस्थ में लोकनाथ, अमरकण्टक में अमरनाथ, लवपुरी में पशपुतिनाथ तथा रुद्रप्रयाग में एकादशरुद्रेश्वररूप में व्यक्त हैं।

उपर्युक्त दिव्य शिवक्षेत्रों का स्मरण एवं श्रवण पुण्यदायक माना जाता है।

(उपर्युक्त अध्याय गीताप्रेस गोरखुपर द्वारा प्रकाशित तीर्थांक तथा शिवोपासनांक पर आधारित है।)

❀❀❀❀❀❀

सत्संग का महत्त्व

जैसे चिन्तामणि(स्पर्शमणि) का स्पर्श करके लोहा भी सुवर्ण हो जाता है, जैसे जम्बू नदी में पड़ी हुई मिट्टी भी सोना हो जाती है, जैसे मानस-सरोवर में आकर कौए भी हंस हो जाते हैं और जिस प्रकार एक बार भी अमृत पी लेने पर मनुष्य अजर-अमर देवता हो जाता है, उसी प्रकार महात्मापुरुष अपने दर्शन तथा स्पर्श आदि से पापियों को तत्काल पवित्र कर देते हैं।

यथा चिन्तामणिं स्पृष्ट्वा लोहं कांचनतां व्रजेत्।
यथा जम्बूनदीं प्राप्य मृत्तिका स्वर्णतां व्रजेत्।।
यथा मानसमभ्येत्य वायसा यांति हंसताम्।
यथामृतं सकृत्पीत्वा नरो देवत्वमाप्नुयात्।।
तथैव हि महात्मानो दर्शनस्पर्शनादिभिः।
सद्यः पुनन्त्यघोपेतान्सत्संगो दुर्लभः कृतः।।

(स्कन्दपु. ब्रा. ब्राह्मो. 15/12-14)

साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साधनः।
तीर्थ फलति कालेन सद्यः साधुसमागमः।।

(संक्षिप्त स्कन्दपुराणांक(गीताप्रेस) नागरखण्ड 21/68 पृ. 837 से उद्धृत)

साधुजनों का दर्शन पवित्र होता है, क्योंकि साधुपुरुष तीर्थस्वरूप हैं। तीर्थ तो कुछ समय के बाद ही फलता है, परन्तु साधुपुरुषों का समागम तत्काल फल देता है।